आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5 अंक : 3 नवम्बर, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

''ग्राम'' उदयपुर

कुलपति सन्देश

कृषि और पशुपालन की नवीन तकनीकी को जानने का अवसर

प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान–पशुपालक भाईयों और बहनों !

राम–राम सा। राजस्थान सरकार की महत्वाकांक्षी योजना ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) के तीसरे चरण में उदयपुर संभाग के ''ग्राम'' का आयोजन इस माह की 7–9 नवम्बर को उदयपुर जिला मुख्यालय पर किया जा रहा है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषकों व पशुपालकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह हमारे राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास का भी अभिन्न अंग है। राज्य के कृषकों और पशुपालकों के हित साधने के लिए इसका आयोजन किया जा रहा है। जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय और कोटा के संभागीय स्तरीय 'मीट' से कृषि व पशुपालन के क्षेत्र में निवेश के साथ–साथ पशुपालकों और कृषकों को इस क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और नई तकनीकों से रूबरू होने का अवसर मिला है। कृषि और पशुपालन में किसानों की आय को दोगुना करने के लिए वैश्विक दृष्टिकोण के साथ उन्नत तकनीकों और नवाचारों को अपनाना होगा। ग्राम में कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन के क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान और नवीनतम जानकारी के साथ–साथ व्यावसायिक सफलता के लिए बहुत कुछ देखने, सीखने और करने का अवसर मिलता है। आपको ऐसे सुनहरे अवसर का अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए। किसान, पशुपालक, शिक्षाविद्, तकनीकी विशेषज्ञ, कृषि व्यावसायिक प्रबंधक और कंपनियां तथा नीति निर्धारक इसमें सम्मिलित होंगे। समारोह में वैज्ञानिक संगोष्ठियां, संवाद, उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी के स्टॉल, उन्नत पशुधन प्रदर्शन, क्षमता निर्माण, अर्न्तराष्ट्रीय कृषि में सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को साझा करने का एक अवसर है। 'ग्राम' उदयपुर में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य में पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों का भी प्रदर्शन किया जाएगा। ग्राम में प्रदर्शनी, स्टॉल, पशु–शो और जाजम जैसे आयोजन में पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों की सेवाएं उपलब्ध रहेगी। तीन दिवसीय प्रदर्शनी में पशु आहार, चारा उत्पादन, पशुचिकित्सा और उपचार, और पशुओं के प्रबंधन जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी जाएगी। यह विश्वविद्यालय देशी गोवंश के संवर्द्धन और संरक्षण के कार्यों में एक अग्रणी संस्थान है। पूरे राज्य में राजुवास के प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्रों पर देशी पशुओं और गोवंश संवर्द्धन कार्यों से राज्य के पशुधन को लाभ मिल रहा है। मुझे आशा है कि, आप ग्राम जैसे आयोजन में शिरकत कर इस अवसर का पूरा लाभ उठायेंगे।

(प्रो. बी. आर. छीपा)

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट
7-9 नवम्बर 2017
उदयपुर

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत राजुवास में आयोजित कृषि एवं पशु विज्ञान मेले में 'प्रगतिशील पशुपालक : नवाचारों से आई खुशहाली' पुस्तिका का विमोचन करते हुए

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन में उदयपुर के नवानियां स्थित वेटरनरी महाविद्यालय के बढ़ते कदम

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर का संघटक संस्थान वेटरनरी महाविद्यालय, नवानियॉं, वल्लभनगर (उदयपुर) विश्वविद्यालय के दक्षिणी कैम्पस के रूप में भी जाना जाता है। यह पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नये आयाम स्थापित कर रहा है। झीलों की नगरी उदयपुर से यह महाविद्यालय 40 किलोमीटर दूर वल्लभनगर तहसील के नवानियां गांव में स्थित है। इस महाविद्यालय की नींव 15 अप्रैल 2007 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे द्वारा रखी गयी। 13 मई 2010 को राजुवास, बीकानेर की स्थापना के पश्चात् वेटरनरी कॉलेज, नवानियां इस विश्वविद्यालय का संघटक महाविद्यालय बन गया। दक्षिणी राजस्थान के जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में यह वेटरनरी कॉलेज निरन्तर प्रगतिशील है तथा पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षण, शोध एवं प्रसार की अनवरत मिसाल कायम कर रहा है।

पशुचिकित्सा शिक्षा

इस महाविद्यालय में कुल पन्द्रह विभाग हैं जिसमें शरीर रचना, कार्यिकी एवं जैव रसायन, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन प्रबंधन, पशुधन उत्पादन तकनीकी, पशु पोषण, प्रसार शिक्षा, जनस्वास्थ्य, वेटरनरी फार्मकोलोजी, वेटरनरी माइक्रोबायोलॉजी, वेटरनरी पेरासाईटोलॉजी, वेटरनरी पेथोलॉजी, वेटरनरी मेडिसीन, वेटरनरी सर्जरी एवं रेडियोलॉजी तथा वेटरनरी गायनीकोलॉजी विषय पढाये जाते हैं। सभी विभागों में वेटरनरी कौंसिल ऑफ इण्डिया के मानकों के अनुरूप सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में रोगी पशुओं की चिकित्सा हेतु अत्याधुनिक पशुचिकित्सालय तथा पशुपालन शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिये पशुधन फार्म (एलएफसी) एवं पशु जैव विविधता इकाई (बायोडाइवरसिटी) कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय में स्नातक (बी.वी.एससी. एवं ए.एच) के साथ–साथ विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर (एम.वी.एस.सी) और पी.एच.डी पाठ्यक्रम भी संचालित किये जा रहे हैं। इनके माध्यम से महाविद्यालय में शिक्षण के साथ ही शोध को गति मिली है। इन पाठ्यक्रमों के साथ ही वर्ष 2010–11 से पशु कम्पाउन्डर अथवा पशुधन सहायक के रूप में मानव संसाधन निर्माण हेतु द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम (ए.एच.डी.पी.) भी चलाया जा रहा है जिससे विशेषकर दक्षिणी एवं पूर्वी राजस्थान के पशुपालको के साथ–साथ सम्पूर्ण राज्य के पशुपालक लाभान्वित हो रहे हैं।

अत्याधुनिक पशु चिकित्सा सेवाएं

क्षेत्र में पशु रोगों के निदान एवं उपचार हेतु इस महाविद्यालय में अत्याधुनिक सुविधाएं युक्त पशुचिकित्सालय संकुल की स्थापना की गई है जिसमें विभिन्न प्रजाति के पालतु पशुओं के रोग निदान एवं उपचार की समस्त सुविधाएं जैसे एक्स–रे, सोनोग्राफी, रक्त, मल, मूत्र की जाँच आदि सुविधाएं उपलब्ध है। इस पशुचिकित्सालय में पशुओं हेतु इनडोर वार्ड के साथ–साथ रोगी पशुओं के परिचारकों के लिए ठहरने की व्यवस्था भी है। यहाँ रोगी पशुओं की विभिन्न शल्य चिकित्सा हेतु अनुभवी चिकित्सकों की सेवाएं उपलब्ध हैं, साथ ही पशुधन में बांझपन निवारण हेतु उपचार सुविधा भी है। पशुचिकित्सालय में राज्य की अनोखी रोगी पशु एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध है। इसका लोकार्पण माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा किया गया था। पशुचिकित्सा औषध शास्त्र विभाग द्वारा पशुओं में ताप–घात से बचाव एवं निर्जलीकरण के उपचार हेतु पशुओं के लिए ओ. आर. एस. की निर्माण इकाई रिवोल्विंग फंड योजना के तहत् स्थापित की गई है। महाविद्यालय में शोध को बढ़ावा देने हेतु पब्लिक हेल्थ विभाग द्वारा पेरीमिल्क स्टडी की गई है, जिसमें गायों में टी.बी., ब्रुसेलोसिस, थनैला जैसे जूनोटिक रोगों का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं प्रतिजैविकों व कीटनाशकों के अवशेषों का अध्ययन किया गया। गत वर्ष महाविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा जन स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया, जिसमें देश के 20 राज्यों के 284 वैज्ञानिकों ने भाग लेकर अनुसंधान सम्बन्धी अनुशंषाएं प्रस्तुत की। महाविद्यालय द्वारा मारवाड़ी घोड़ियों एवं सिरोही बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान का कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है।

मछली पालन में नए आयाम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविज्ञालय, नवानियां में मछली घर एवं सजावटी बहुरंगीन मछलियों का व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन शुरू किया गया है। जल–जीवशाला यानी एक्वेरियम रखना शौक के साथ–साथ व्यवसाय के रूप मे अपनाया जाये तो अतिरिक्त आय का साधन बन सकता है। थोड़े से प्रशिक्षण से ही एक्वेरियम बनाना, रंगीन मछलियों का पालन, प्रजनन एवं रख–रखाव सीख सकते हैं। महाविद्यालय में अजोला उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट एवं बायोगैस इकाई भी स्थापित की गई है।

सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

महाविद्यालय द्वारा सूचना एवं प्रौद्योगिकी का निरन्तर उपयोग कर कार्यालय कार्यों को सरल व पेपरलैस किया जा रहा है। राजुवास के इंटिग्रेटेट यूनिवर्सिटी मैनेजमेंट सिस्टम (आईयूएमएस) के माध्यम से विद्यार्थियों की ऑनलाइन उपस्थिति एवं अंकों को फीड किया जा रहा है। महाविद्यालय को एम–राजुवास नामक एंड्रोइड मोबाइल एजुकेशनल ऐप्लिकेशन बनाने की स्वीकृति मिली है, जिससे कभी भी कहीं भी पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान सम्बन्धी विषयों को पढ़ाया एवं समझा जा सकता है। साथ ही कियोस्क इन्फारमेशन सिस्टम के द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को उपयोगी वैज्ञानिक ज्ञान मिल सकेगा। महाविद्यालय में जीवन्तता एवं छात्र–छात्राओं की रूचि को बनाये रखने के लिए ओरिन्एटेशन कार्यक्रम, फ्रेशर डे कार्यक्रम, युवा महोत्सव, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, पशुचिकित्सा दिवस, खेल सप्ताह, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह, एवं महापुरूषों की जयन्ति समारोह आदि का आयोजन किया जाता रहा है। ऐसे सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों के कौशल एवं प्रतिभा को विकसित किया जाता है। महाविद्यालय परिसर में छात्र–छात्राओं हेतु छात्रावास की अलग–अलग सुविधाएँ, पुस्तकालय एवं खेल मैदान उपलब्ध हैं। साथ ही अतिथि गृह एवं स्टॉफ क्वाटर्स भी निर्मित किये गये हैं।

प्रशिक्षण एवं पाठ्येतर प्रवृतियां

महाविद्यालय में शिक्षण एवं शोध के अतिरिक्त विद्यार्थियों में एनसीसी एवं राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा देश भक्ति जागृत की जा रही है। साथ ही समय–समय पर स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, मेरा गाँव मेरा गौरव, जय किसान जय विज्ञान सप्ताह जैसे सामाजिक मुद्दों पर कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। साथ ही राजस्थान के दक्षिणी जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में महाविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा शिविर एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा पशुपालकों को लाभान्वित किया जा रहा है। महाविद्यालय द्वारा विगत वर्षो में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसान, पशुपालक तथा वनपाल एवं वनरक्षकों को प्रशिक्षित कर कुशल मानव संसाधन को विकसित किया जा रहा है।

सेण्ड ड्यून इन्टरनेशनल शॉर्ट फिल्म फैस्टिवल, बीकानेर में विगत दो वर्षों से महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अभिनीत एवं फैकल्टी द्वारा निर्देशित शोर्ट फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। शोर्ट फिल्म फेस्टिवल में "लक्ष्मी–समाज रो अभिमान", "सपनों की उडान" व "नवीं सोच रो आगाज" नामक तीन फिल्मों ने महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। महाविद्यालय की दो फिल्मों "स्ट्राइक–लर्न द लैसन" व "संघर्ष" ने स्टेट एग्रिकल्चरल यूनिवर्सिटी श्रेणी में क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय की शोर्ट फिल्म "दा लास्ट क्रासिंग" को उत्तर–पश्चिम रेलवे द्वारा प्रशंसा पत्र मिला।

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नवानियां

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के इस दक्षिण परिसर में एक पशुधन अनुसंधान केन्द्र भी स्थापित है। जिसकी स्थापना 1986 में की गई। यह राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अंतर्गत एक इकाई के रूप में कार्य कर रहा है। यहां भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की परियोजनाएं– भैंस परियोजना (सूरती), बकरी नस्ल सुधार परियोजना (सिरोही), मेगा शीप सीड परियोजना (सोनाड़ी), मुर्गीपालन इकाई एवं श्वान पालन इकाई तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की गिर गौवंश प्रजनन फार्म, हाइड्रोपोनिक तकनीकी द्वारा चारा उत्पादन इकाई कार्यशील हैं। हरा चारा उत्पादन फार्म, खनिज लवण मिश्रण बनाना एवं वर्मी कम्पोस्ट इकाई संचालित हैं।

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

नवानियां से 80 किलोमीटर दूरी पर स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय का अन्य संघटक संस्थान पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा की स्थापना वर्ष 2014 में हुई। इस केन्द्र पर सिरोही बकरी नस्ल सुधार हेतु राष्ट्रीय प्रोटीन सप्लीमेंट मिशन की परियोजना संचालित है। यह केन्द्र चारा उत्पादन में आत्मनिर्भर है। हाल ही में यहां वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र (वीयूटीआरसी) की स्थापना की गई जिसमें द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम (ए.एच.डी.पी.) चलाया जा रहा है।

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़)

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़) की स्थापना 2015 में की गई। इस केन्द्र पर मालवी नस्ल पर मालवी गौवंश प्रजनन परियोजना में अनुसंधान किया जा रहा है। यह केन्द्र भी चारा उत्पादन में स्वनिर्भर है। इस केन्द्र पर द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा कार्यक्रम (ए.एच.डी.पी.) भी संचालित है।

भविष्य में इस महाविद्यालय में सभी विषयो में पी. एच. डी. पाठ्यक्रम, पशुचिकित्सा सेवाओं के विस्तार, विद्यार्थियों एवं पशुपालकों के लिए शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, ऑडिटोरियम, खेल स्टेडियम आदि सुविधाओं के सृजन के प्रस्ताव हैं। इसी के साथ पशुपालकों हेतु कौशल विकास एवं स्मार्ट विलेज योजना पर द्रुतगति से कार्य चल रहा है। राज्य सरकार एवं पशुचिकित्सा अनुसंधान परिषद् के सहयोग से यह वेटनरी महाविद्यालय पशुचिकित्सा एवं अनुसंधान के नए आयाम स्थापित करने के लिए संकल्पबद्ध है।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 11, 25, 27 एवं 30 अक्टूबर को गांव परसनेऊ, मोलीसर–बड़ा, जयसंघसर, देपालसर, एवं सूरतपुरा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा 201 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 28 एवं 30 अक्टूबर को गांव 3 पीपीएम, मानवाली और रोजड़ी गांवो में एक दिवसीय, 10 अक्टूबर को एक दिवसीय किसान गोष्ठी तथा 11–12 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 9, 11, 24 एवं 26 अक्टूबर को गांव गोयली, सियावा, सोरडा एवं केसरपुरा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया– लाड़नू द्वारा 9, 10, 11, 25 एवं 26 अक्टूबर को गांव छपारा, बादेड़, शिमला, बेड एवं कोयल गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 116 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र के प्रशिक्षण में 153 पशुपालक शामिल

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 11 12, 25, 26 एवं 27 अक्टूबर को गांव सूपा, पाडलिया, सिलोरा, कालीकांकड एवं सरवीना गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 153 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी.,डूंगरपुर द्वारा 24, 26, 28, 30 व 31 अक्टूबर को फतेपुरा, पालथुर, साबली, रेटा व चंडोली गांवों में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में कुल 190 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 9, 11, 24, 25, 28 एवं 30 अक्टूबर को गांव दौलतपुरा, छपरा, बूडली मैरथा, कनवारी एवं दिलावती गांवों में एवं दिनांक 27 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 9 महिला पशुपालकों सहित कुल 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., टोंक द्वारा 24, 25, 26, 27 एवं 31 अक्टूबर को टोपा, सुखनिवासपुरा, हरभगतपुरा, इन्दोकिया एवं पालड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 154 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 25, 26, 27 एवं 30 अक्टूबर को भीकनेरा, चकजोड़, बालादेसर एवं बडेरन गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 122 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा 3, 4, 11, 25, 29, 30 एवं 31 अक्टूबर को गांव ब्रिलाजिया, छेडली–महादीप, कोटरी, श्यामपुरा, मामोर, मेहराणा एवं गावड़ी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 196 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 4, 9, 10, 11, 24, 26 एवं 27 अक्टूबर को मेवासा, टिला खेड़ा, इन्दोरा, पेमड़िया खेड़ा, सरोफा, ईडरा, बिहारीपुरा एवं अगोरिया गांवों में तथा दिनांक 25 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा 10, 11, 24, 25 एवं 27 अक्टूबर को टाडा का पुरा, भैंसेन का पुरा, हवेली का नगला, नगडिया एवं नयापुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 201 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 2 अक्टूबर को स्वच्छता ही सेवा किसान संगोष्ठी गांव रामगढ़ में तथा 15 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में महिला किसान दिवस संगोष्ठी एवं 28, 30 एवं 31 अक्टूबर को गांव कुंजी, नुवां एवं दुरजाना गांवो में आयोजित एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 170 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

सर्दियों में होने वाले रोगों से पशुओं का बचाव कैसे करें ?

कुछ वर्षों में देखा गया है कि सर्दियां देरी से शुरु हो रही हैं और नवम्बर माह में सर्दी का प्रभाव शुरु होता है। इन दिनों सामान्तया दिन तथा रात के तापमान में काफी अन्तर रहने लगा है। दिन के समय वातावरण में गर्मी और रात के समय तापमान में गिरावट आती है जिसकी वजह से छोटे–बड़े सभी प्रकार के पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी से पशु विभिन्न संक्रमणों से भी प्रभावित हो सकता है। इस मौसम में पशु कई प्रकार के विषाणुजनित एवं जीवाणुजनित रोगों का शिकार होते हैं। इस मौसम में ऊँटों व भेड़–बकरियों में माता रोग काफी प्रभावित करता है। भेड़–बकरियों में पीपीआर रोग काफी नुकसान पहुंचाता है। गौवंश एवं भैसों में खुरपका–मुंहपका रोग काफी प्रभावित करता है जिसकी वजह से पशुओं में मृत्यु भी होती है और उनका उत्पादन भी गंभीर रूप से प्रभावित होता है। इस मौसम में गौवंश एवं भैंसों में विशेषकर छोटे बच्चों में लंगड़ा बुखार से भी मृत्यु काफी होती हैं। इसके अतिरिक्त सर्दियां शुरु होने के साथ ही वातावरण में नमी बढ़ जाती है जिसके कारण पशु गलघोंटू से भी काफी प्रभावित होते हैं। सर्दी के समय में गाय–भैंस, ऊँट, घोड़े, भेड़–बकरी आदि सामान्यतया न्यूमोनिया से भी प्रभावित हो जाते हैं।

इनमें से कुछ रोगों (खुरपका–मुहपका, लंगड़ा बुखार, गलघोंटू, पीपीआर और माता रोग) से बचाव के लिए टीका (वैक्सीन) उपलब्ध है। अतः यदि पशुपालकों ने अपने पशुओं का अभी तक टीकाकरण नहीं करवाया है तो वे बचाव के लिए पशु चिकित्सक की सलाह पर पशुओं का टीकाकरण करवा लें। न्यूमोनिया से बचाव के लिए रात के समय घर के दरवाजे–खिड़कियों पर पल्ली इत्यादि का प्रयोग करें। पशुओं को इस मौसम में बिना आवश्यकता नहीं नहलाएं। अन्य संक्रमण एवं बीमारी की स्थिति में पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

बदलते परिवेश में पशुपालक महिलाओं की भूमिका

हम परिवर्तनशील दुनिया में जीते हैं। कृषि व पशुपालक क्षेत्र भी परिवर्तन से अछूता नहीं है और इसका मुख्य कारण है जलवायु में परिवर्तन। भारत में गत् 100 वर्षो में औसतन 0.60 सेंटीग्रेड. तापमान बढ़ गया है जो आगे भी ओर बढ़ेगा। इस कारण पानी, खाद्यान्न की कमी और चारे का संकट चुनौति के रूप में हमारे सामने प्रकट होगा। जलवायु परिवर्तन का कृषि क्षेत्र पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव पड़ता है।

हमारा देश कृषि प्रधान है। अतः भविष्य में आजीविका व खाद्य सुरक्षा डगमगा सकती है। जलवायु परिवर्तन भारत जैसे विकाससशील देशों के लिए अधिक हानिकारक हो सकता है। हमारे अधिकांश कृषक व पशुपालक, लघु व सीमांत वर्ग से हैं और पूँजी की कमी से ग्रस्त हैं। जलवायु के बदलते परिप्रेक्ष्य में, उन्हें अपनी कृषि व डेयरी की उत्पादकता को बनाए रखना है, तो आज से ही उन्हें कार्य आरंभ करना होगा। भारत सरकार ने बहुत पहले ही इस बदलते जलवायु परिप्रेक्ष्य पर विचार कर, एक राष्ट्र–स्तर की परियोजना चलाई है, जिसके तहत किसानों के लाभ हेतु शोध–कार्य व किसानों को जागरूक करने का कार्य शुरू किया गया है। सरकार तो अपना कार्य कर ही रही है लेकिन अब हमारे किसानों व किसान–बहनों को भी अपना कार्य आरंभ करना है।

पशुपालन में सबसे अधिक व अहम् भूमिका महिलाओं की है। इसलिए पशुओं को जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बचाने तथा पशु उत्पादन बनाए रखने के लिए महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

जलवायु परिवर्तन का डेयरी पशुधन पर प्रभाव :

दूध उत्पादन में गिरावट, प्रजनन क्षमता में कमी, पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट, रोग, कीट या परजीवी रोगों में वृद्धि, पानी पीने की तीव्रता का बढ़ जाना, खुराक कम हो जाना, पशुओं का श्वसन दर बढ़ जाना, पशुओं की वाहक क्षमता में कमी इसके दुष्प्रभाव हैं। इससे विदेशी व संकर नस्ल के पशु अधिक प्रभावित होते हैं। इन प्रभावों से पशुओं को बचाने व उनकी उत्पादन क्षमता व स्वास्थ्य को बनाए रखने में, महिलाएं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, क्योंकि, पशुपालन का अधिकांश कार्यभार महिलाओं पर निर्भर होता है।

पशुओं को बढ़ते तापक्रम के प्रभावों से बचाएं :

पशुओं को आश्रय/बाड़ों में रखें, पशुओं को नियमित रूप से नहलाना, पानी में छोड़ना या पानी की उन पर बौछार करना जरूरी है। उन्हें ठंडा व साफ पानी पिलाएं–पशु जब चाहें, पानी पी सकें, पंखें, पर्दे, कूलर, या छायादार वृक्षों के नीचे पशुओं को रखें, फव्वारे, शीतलन प्रणाली व अन्य साधनों का यथासंभव उपयोग करें, हरा चारा खिलाएँ, कीट व परजीवी नियंत्रण प्रणाली का सही–उपयोग करें, पशुओं को सही समय पर, संक्रामक रोगों से बचाव के टीके लगवाएं।

अगर महिलाएं ध्यान रखें तो परिवर्तनशील जलवायु में भी वे अपने पशुधन से अच्छी आय के स्त्रोत को बनाए रख सकती हैं लेकिन, इस भूमिका को और महत्वपूर्ण बनाने के लिए हमारी पशुपालक बहनों को कुछ अन्य बातें भी ध्यान में रखकर प्रयोग में लानी चाहिए।

पशुपालन में अपनी भूमिका और सक्रिय ढंग से नवीन भूमिका निभाने में अंतर है। उसे समझ कर, बहनों को अपनी कार्य–कुशलता को बढ़ाना होगा। सबसे पहले वे अपनी जागरूकता बढाएं व अपने पशुपालन से जुड़े ज्ञान में अभिवृद्धि करती रहें। यह कार्य कृषि व पशुपालन पत्रिकाओं अथवा

रेड़ियो या टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रमों द्वारा हो सकता है। पशुपालन/डेयरी के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लें व पशुपालन के विभिन्न आयामों में अपनी कौशलता व निपुणता बढाएं। आज कंप्यूटर युग है–इसलिए कंप्यूटर (जो आजकल ग्रामीण क्षेत्र में भी प्रायः हर घर में, कम से कम बच्चों के पास है) चलाना सीखें– इस काम में परिवार के बच्चे भी गुरू बन सकते हैं। कंप्यूटर चलाना सीखकर, इसका प्रयोग रिकॉर्ड रखने में व ज्ञान/जानकारी प्राप्त करने के लिए करें। एक महिला सीखे और वह अन्य पांच महिलाओं को सिखाएं। इससे महिलाओं की पशुपालन में भूमिका और भी सशक्त होगी। जब भी कोई विस्तार या प्रसार विभाग का कार्यकर्ता अथवा पशु चिकित्सक आए या बुलाया जाए तो महिलाएं बिना किसी संकोच के, जानकारी प्राप्त करें। एक बार में यदि कुछ बात समझ में न आए तो दुबारा पूछें, व अपनी आशंका दूर करें। अपने पशुपालन को एक उद्योग का रूप देने की कौशिश करें। लघु–सीमांत वर्ग के परिवारों की पशुपालक महिलाएं 15–20 एकत्रित होकर स्वयं सहायता समूह गठित कर, पशुपालन में अपनी भूमिका को परिवर्तित कर, लाभ उठा सकती हैं। महिलाओं को पशुपालन में एक घरेलू मज़दूर या केवल देखभाल करने वाली की भूमिका से हट कर एक प्रबन्धक की तरह कार्य करने की जरूरत है। इसलिए अपनी क्षमता, कार्यकुशलता, आत्म–निर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता, समय उपलब्धि के अनुसार कार्य करने की कुशलता और ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता है। परिवर्तनशील जलवायु परिप्रेक्ष्य में, पशुधन को जलवायु परिवर्तन के प्रकोप से बचाए रखने व उनकी उत्पादन क्षमता को बनाए रखने के लिए नवीनतम तकनीकी को अपनाना होगा। इससे परिवार की आजीविका का स्त्रोत बना रहेगा। इससे महिलाएं अपनी परिवर्तित भूमिका में स्वयं अपनी व अपने पड़ौसी गांव की नज़रों में भी बहुत ऊंचा स्थान बनाने में सफल हो सकेगी।

प्रो. बसंत बैस, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर मो. : 9413311741

जिला स्तरीय कृषि एवं पशु विज्ञान मेला सम्पन्न

नए भारत के निर्माण के लिए तकनीक खेत तक पहुँचाए: केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री शेखावत

पशु, फसल, फल व सब्जी प्रतियोगिता के विजेता हुए पुरस्कृत

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने 6 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में जिला स्तरीय कृषि एवं पशु विज्ञान मेले का उद्घाटन किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक ''आत्मा'' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय मेले में जिले के 2 हजार से भी अधिक किसानों ने शिरकत की। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री ने इस अवसर पर कृषि एवं पशुपालन की प्रदर्शनी का फीता काट कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री शेखावत ने कहा है कि नए भारत का निर्माण करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीक को किसान के खेत तक पहुंचाना होगा। उन्होंने कहा कि भारत का किसान समझदार और सक्षम है। यदि कृषि और पशुपालन की नव तकनीक को उनके गांव या खेत में प्रदर्शित किया जाए तो वो इस पर तत्काल अमल कर लेगा अतः वैज्ञानिकगण गांवों को गोद लें। समारोह के विशिष्ट अतिथि राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. जे.पी. सिंघल और किसान संघ राजस्थान के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री कृष्ण मुरारी ने भी किसानों को सम्बोधित किया। समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। इस क्षेत्र में कौशल विकास और मूल्य संवर्द्धन की विपुल संभावनाएं हैं। जमीन में कीटनाशकों के दुष्प्रभावों को कम किए जाने की जरूरत है। प्रारंभ में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। मेले के संयोजक और प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि मेले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 6 संस्थानों सहित विभिन्न विभागों और कृषि विश्वविद्यालय, कृषि आदानों और उपकरणों के 60 स्टॉल में तकनीक व वैज्ञानिक रीति–नितियों का प्रदर्शन किया गया। कृषि उपनिदेशक पदेन परियोजना निदेशक आत्मा श्री बी.आर. कड़वा ने आत्मा की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। उद्घाटन समारोह में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री शेखावत और अतिथियों ने वेटनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित ''प्रगतिशील पशुपालक : नवाचारों से आई खुशहाली'' पुस्तक व ''पशु पालन के नये आयाम'' मासिक प्रकाशन के ताजा अंक का विमोचन किया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुंह–खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर, पाली बांसवाड़ा, भरतपुर, जयपुर, बीकानेर, दौसा, अलवर, अजमेर, भीलवाडा
पी.पी.आर. (P.P.R.)	बकरी, भेड़	पाली, सिरोही, सवाईमाधोपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, जयपुर, बीकानेर, चूरू, नागौर
चेचक/माता रोग (Pox)	ऊंट, बकरी, भेड़	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, हनुमानगढ़, नागौर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, टौंक, बूंदी, राजसमन्द, सीकर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चूरेलोसिस संक्रमण	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	सीकर, अलवर, टोंक, जालोर, जयपुर, झुंझुनू, बीकानेर
फड़किया (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	टोंक, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बांसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, धौलपुर
Enzootic Abortion in Ewes (EAE)/Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, सीकर
बबेसियोसिस, थाईलेरिओसिस	गौवंश	बीकानेर, धौलपुर, बूंदी, चूरू, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि, पर्ण–कृमि एवं फीता–कृमि)	भैंस, गाय, भेड़, बकरी, ऊंट	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़, प्रतापगढ़, बीकानेर, सीकर, अलवर, चूरू

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी ऊँट वंश को पहचानें > मारवाड़ी ऊँट : गौरव प्रदेश का

ऊंट की मारवाड़ी नस्ल राजस्थान के बाड़मेर, जालौर एवं जोधपुर जिलों में मुख्यतया पाई जाती है। इन्हें भार ढोने एवं परिवहन के कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है। ये अधिक भार ढ़ोने व कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त है। इन्हें सवारी के लिए भी काम में लिया जाता है। यह दुग्ध उत्पादन के लिए भी उपयुक्त है। इनके शरीर का रंग हल्के से गहरा भूरा होता है। कुछ ऊंट बिल्कुल सफेद भी होते हैं। शारीरिक रंग में इतनी विभिन्नता अन्य किसी नस्ल में देखने को नहीं मिलती। सिर छोटा लेकिन गर्दन पर अच्छे से टिका होता है। इनका चेहरा लम्बा व पतला होता है। आंखों के पास गड्ढ़े नहीं पाये जाते हैं। इनका थूथन ढीला तथा निचला होंठ थोड़ा लटका हुआ होता है। गर्दन लम्बी व पतली होती है तथा गर्दन की वक्रता बीकानेरी ऊंट से कम होती है। इनकी कदकाठी छोटी व शरीर कम भारी होता है। शरीर का पिछला हिस्सा अधिक मजबूत होता है तथा पैर लम्बे व तलवा मोटा होता है। इनका अयन व दुग्ध नस अच्छे से विकसित होती है। इनसे शरीर पर मोटे बाल होते है जो इन्हें जंगली मधुमक्खियों तथा कीड़ों द्वारा काटे जाने से बचाते हैं।

सफलता की कहानी

इंजिनीयर अनिल जिंदल ने नौकरी छोड़ उन्नत एवं वैज्ञानिक पशु-पालन अपनाया

श्रीगंगानगर के अनिल जिंदल ने इंजिनीयर बनकर भी पशुपालन को अपनाया है। उन्होंने अपने गाँव 17 एमएल पठानवाली में एक हाई–टेक फॉर्म स्थापित किया तथा वैज्ञानिक तरीके से पशु पालन को व्यवसाय के रूप में शुरू किया। अभियांत्रिकी शिक्षा के बाद अनिल जिंदल ने विभिन्न प्रकार की नौकरी एवं व्यवसाय किए परन्तु उन्हें संतुष्टि नहीं मिली। वे पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसधांन केन्द्र के सम्पर्क में आए तथा पशु पालन के बारे में जानकारी अर्जित करने लगे। धीरे –धीरे उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। जब युवा खेती और पशुपालन से मुंह मोड़ रहे हैं, ऐसे समय में उन्होंने पशुपालन को वैज्ञानिक एवं आधुनिक तरीके से करने का निश्चय किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों से पशु शाला निर्माण के तौर–तरीकों एवं वैज्ञानिक पशुपालन की जानकारी इकट्ठी की तथा उन्नत पशु शाला का निर्माण किया। उन्होंने विदेशी नस्लो की हालत को देखकर देशी नस्लों से डेयरी व्यवसाय शुरू करने का निश्चय किया। केन्द्र से विभिन्न देशी नस्लों के गुणों एवं लक्षणों की जानकारी प्राप्त कर राज्य के विभिन्न भागों से देशी नस्लों को इकट्ठा करना शुरू किया। मुख्य रूप से साहीवाल, थारपाकर तथा गिर नस्लों के देशी गोवंश को व्यवसाय के लिए उपयुक्त माना। इंजिनीयर अनिल ने अजोला उत्पादन, साइलेज बनाने की तकनीक, वर्मी कम्पोस्ट की तकनीकों को भी अपनाया। आज इनके पास 21 देशी नस्ल के पशु हैं जिनमें से अभी 6 दुधारू हैं इससे प्रतिदिन 36 लीटर दूध का उत्पादन कर श्रीगंगानगर में बोतल पैक कर लगभग 80 रूपये प्रति लीटर की दर से बेच रहे हैं। अनिल का कहना है कि उनकी पशु शाला के दूध की माँग इतनी है कि वे इसकी पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। लोगों की बढ़ती मांग और रूचि को देखते हुए वे अपने दुग्ध व्यवसाय को बड़े पैमाने पर शुरू करने के कार्य में जुटे हुए हैं। आने वाला कल देशी गोवंश के पालन और उनके उत्पादों का ही बाजार उपलब्ध करवाएगा। **(सम्पर्क : अनिल जिंदल, श्रीगंगानगर, मो. : 9462578161)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

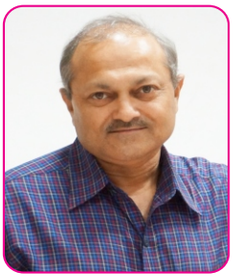

स्वस्थ व निरोगी पशुधन के लिए नि:शुल्क सेवाओं का लाभ उठाएं

प्रिय पशुपालक व किसान भाईयों और बहनों !

असामयिक दुर्घटनाओं, महामारियों और अन्य संक्रामक रोगों से बचाव के लिए कीमती पशुधन को बचाने के लिए पशुचिकित्सक की सलाह और अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाओं का उपयोग किया जाना जरूरी है। पशुचिकित्सा विज्ञान के आधुनिक तौर–तरीकों के लिए पशुचिकित्सा विशेषज्ञ के साथ पशुपालक और कृषकों का उचित समन्वय और संवाद का होना आवश्यक है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) स्थित महा विद्यालयों के टीचिंग वेटरनरी एवं क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स में पशु उपचार सेवाएं सुलभ हैं। राज्य का अधिकांश पशुपालक समुदाय दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। पशुपालकों के लिए पशुओं का परिवहन एक दुरूह और खर्चीला कार्य है। ऐसे में उपलब्ध दूरसंचार संसाधनों के माध्यम का उपयोग करने के लिए हमें जागरूक रहना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के पशुपालक और किसानों के हित में दूरसंचार पर सलाहकारी सेवाएं और रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से पशुचिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाएं सुलभ करवाई जाती है। राजुवास ने इसके लिए वॉयस मैसेज सर्विस सेवाएं प्रारंभ की हैं। इस नेटवर्क से जुड़कर आप घर बैठे पशुचिकित्सा एवं पशुपालन की सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया गया टोल फ्री हैल्पलाइन नम्बर 1800–180–6224 पर चौबीसों घंटे विशेषज्ञों से संवाद स्थापित कर पशुपालन संबंधित परामर्श प्राप्त किया जा सकता है। इनके साथ–साथ राज्य के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रतिमाह हर एक गुरुवार को पशुपालन से सम्बद्ध 6 वैज्ञानिक विशेषज्ञ वार्ताओं का प्रसारण भी किया जा रहा है। इन सेवाओं का उपयोग आप कहीं भी रहकर कर सकते हैं और यह हमारे निरोगी पशुधन की खुशहाली और उत्पादकता बढ़ाने में मददगार है। आप भी इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **नवम्बर, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. साकार पालेचा** 946002249 पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं की जांच एवं इमेजिंग की आधुनिक सुविधा	02.11.2017
2	**डॉ. ए.के. पटेल** 9414247042 केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर	मरूस्थल क्षेत्र में उन्नत भेड़–बकरी पालन द्वारा किसानों की आमदनी में वृद्धि	09.11.2017
3	**प्रो. हेमन्त दाधीच** 9351687945 पशु व्याधि विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	शीत ऋतु में होने वाले पशु रोगों के प्रमुख लक्षण एवं उनके बचाव	16.11.2017
4	**प्रो. विजय कुमार चौधरी** 9461472793 एल.पी.एम., सी.वी.ए.एस., बीकानेर	दुधारू पशुओं का चयन एवं प्रबंधन	23.11.2017
5	**प्रो. अन्जू चाहर** 7597741604 वेटरनरी मेडिसन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	अश्वों की संक्रामक बीमारियां एवं उनके बचाव	30.11.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। → **1800 180 6224**